अंतरा-शब्दशक्ति

मनकही

काव्य संग्रह

काजल भालोटिया

मनकही

(काव्य संग्रह)

काजल भालोटिया

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-20-9

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अणुडाक -antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © काजल भालोटिया

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

'Mankahi' by 'Kajal Bhalotiya'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत :प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं

भूमिका

आज आपके सामने अपनी मनकही कहना चाहती हूँ। सबसे पहले मैं प्रीति जी और शिखा जी का हार्दिक धन्यवाद करती हूं कि उन्होंने मुझे इस किताब के लिये चुना।

यूँ तो बचपन से ही लिखने और पढ़ने का शौक रहा , पर बीते सालों में पारिवारिक ज़िम्मेदारी के कारण लिखना भूल गई थी। लिखना और पढ़ना शुरू से मेरी रुचि रही और मैंने हिंदी विषय में स्नाकोतर किया है ,,जब बच्चे थोड़े बड़े हुए तो धीरे धीरे लिखना शुरू किया, फिर लोगों के प्रोत्साहन से शौक कब जुनून बन गया पता भी नहीं चला और मैं बस मन के भावों को पन्नों पर उकेरती अपनी मनकही कहती चली गई।जब कभी कुछ गलतियां होती तो मेरे पति मेरा हौसला बढ़ाते।

धीरे धीरे दैनिक समाचार पत्रों में भी मेरी रचनाएं आने लगी फिर पहली बार साझा काव्य संग्रह में मेरी रचनाएं आई जिसके लिए मैं रूपल जौहरी जी का हृदय से आभार प्रकट करती हूँ कि उन्होंने मुझे एक मंच दिया। दिल्ली में साहित्य सारथी सम्मान पाकर अभिभूत हुई। वहां कई जाने माने लेखकों से मुलाकात हुई जिन्होंने मेरा हौसला बढ़ाया और इस तरह मैं अपनी मनकही कहती चली गई। इस पुस्तक के लिये यही कहूंगी की इसमें मैंने अपने कई प्रिय विषय आप सभी से साझा किए हैं आशा है आप सभी इसे पसंद करेंगे।

एक बार फिर से प्रीति जी का दिली आभार और शुभकामनाएं,....

काजल भालोटिया

अनुक्रमणिका

1. प्रेम 5

2. पुरुषत्व 6

3. स्त्रीत्व 8

4. अबोला प्रेम 10

5. दिल है कि मानता नहीं 12

6. सराय 14

7. सादा रंग 16

प्रेम

इस ढाई आख़र के शब्द की अलग-अलग महत्ता,
अलग-अलग रूप और रंग है।
ये प्रेम शब्द तो हज़ारों रंगों से रंगा अल्हड़
बैचेन सा मस्ती में ओत-प्रोत है।

ये सुबह की गुनगुनी धुप तो शाम की ठंडी हवा भी है।
ये फगुआ में बहती पुरवाई और जेठ की तपती दोपहरी सी है।
ये तो माँ के ममता सी सरल और शिशु के प्रेम सा सरल भी है।
तो कभी पति की बाहों का आमंत्रण और एक दूजे को ताउम्र समझते रहना
ये भी तो प्रेम ही है।

याद करो जब भाई बहन का प्रेम तो ये निश्छल निर्मल गंगा जैसा
और अपने मित्र से ताउम्र मित्रता निभाना ये भी तो प्रेम ही है ना???
देश प्रेम की ख़ातिर तन जाता है
जब शीश और सरहद पर जवान हँसते हुए अपनी जां लुटा दे,....
इस प्रेम का तो क्या है कहना।

पर अब न जाने प्रेम की परिभाषा कैसी
बस रिश्तों से ना जानी जाती
ये तो मेरे अंतरमन में घूमती है बस बनकर एक कविता
जब हर पंक्ति के
एक-एक अक्षर में कविता दिखे,..

और भीतर ही भीतर मन आनंदित हो
रोम रोम में वीणा की तार सा झंकृत होकर
बेख़ौफ़ झूमे नाचे गाये
मेरी समझ में यही और यही प्रेम है।

पुरुषत्व

सोच रही हूँ, यूँ ही...
आज की नारीवादी दुनिया में
नारीशक्ति का नारा लगाते पुरुष का पुरुषत्व,
उनके आचार-विचार और उनके व्यवहार
और शायद अपनेपन के बारे में भी
कि क्यों कुछ मर्यादाहीन पुरुषों की वजह से
सारी पुरुष जाती बदनाम है??

जाने क्यों,
लोग उन्हें संवेदनहीन और दिशाहीन मानते हैं
जबकि सृष्टि के निर्माण में होता है
उनका भी अंश
दोनों पूरक हैं एक दूसरे के,...

गर गौर से देखा जाये तो भी जाने क्यों,
नज़र नहीं आता उनका त्याग और समर्पण
जिनमें दबी होती हैं उनकी तमाम इच्छाएँ और
कुछ दबे दबे से वो सपने
जो परिवार की ख्वाहिशों को पूरा करने में अधूरे रह जाते हैं,..

कोल्हू के बैल की तरह ज़िम्मेदारियों का बोझ उठाते
नहीं हिलते उनके मजबूत कंधे कभी भी
कि चेहरे पर एक सौम्य मुस्कान लिए छुपाते हैं अपनी सारी परेशानियाँ,

पी जाते हैं सारे गम,
बड़ी ही कुशलता से छुपा लेते हैं वे भी अपने आंसू,
कठोर होने का दिखावा करते हुए,..

जबकि होते हैं बड़े ही भावुक जो
फफक कर रो पड़ते हैं बेटी बहन की विदाई पर,
हो जाते हैं परेशान माँ की तबियत खराब होते ही,
चाहे कितने भी थके हो,
दौड़ पड़ते हैं तुरंत ही बूढ़े पिता जी के गरम जलेबी खाने की फरमाइश पर,
मुस्कुराते हुए,..

बनाने लगते हैं कई प्रोग्राम
कि बेटे का एडमिशन कहाँ और किस कॉलेज में करवाना है?
कमाने की चाह में शहर से बाहर होने पर
मुस्कुराते हुए बार बार पूछते हैं बेटी की फरमाइशें,
तो भी जाने क्यों हम समझ नहीं पाते उनकी जूझन,
जो जीवन से चलती है मृत्यु तक अनवरत....

जबकि श्रृंगार भी उनसे, राखी का त्योहार भी उनसे
कि होम करते हैं वो भी अपना पूरा जीवन
जिम्मेदारियों के अग्निकुंड में,
करते हैं विसर्जन अपनी चाहतों का
और संकल्पित हो कर लेते हैं महा अनुष्ठान जीवन का,
स्वयं एक साधक बन।

स्त्रीत्व

आज यूँ ही,..
बरबस उग आई है एक कविता कोरे पन्नों पर,
जिसमें बिखेर दी स्याही मैंने स्त्री के स्त्रीत्व की,
उसके अस्तित्व की उसके मान की सम्मान की,
और शायद उसके अभिमान और जुनून की भी,
जो किसी भी सूरत में खुद को स्थापित करना चाहती है,..

जाने क्यों
मेरी कविताओं की स्त्रियां
कभी टूटती नहीं हज़ारों ठोकरे खाने के बाद भी,
वो हो जाती हैं पहले से और मजबूत
दुनिया का सामना करते वक़्त,

मेरी कविताओं की स्त्रियां
कभी ठहरती नहीं ज़िंदगी के सफर में,
वो चलती जाती हैं एक मजबूत इरादों के साथ,
और चुन लेती है अपना रास्ता खुद ही
ले लेती है, सारे फैसले बेपरवाह...

वे अपनी चोटी में बाँध लेती हैं
कसकर अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति,
जिसके सहारे
वो किसी भी परिस्थिति से
निकलने में कामयाब हो जाती हैं,..

जाने क्यों रास नहीं आता उन्हें वो अकेलापन,
जो उन्हें भीतर तक तोड़ देता है,
बल्कि वो और घुल मिल जाती हैं लोगों से,
जो उनमें नई ऊर्जा का संचय कर
ऊर्जावान बनाता है,..

वो नहीं देती अधिकार किसी को
खुद पर उसका साम्राज्य स्थापित करने का,
वो हो जाती हैं खुद ही स्थापित
अपनी ही कोशिशों से
बार बार लगातार...

मेरी कविताओं की स्त्रियां
हावी नहीं होने देती
अपनी भावनाओं को अपने मन पर,
वे बड़ी ही कुशलता से सोच समझ कर
सारे फैसले करती हैं,..

ऐसी स्त्रियां निपुण होती हैं
रोकने में अपने आंसू,
वो रोने के ख्याल भर से ही
बड़ी ही सफाई से धो डालती है अपनी लाल होती आँखें,
जैसे आँखों में अचानक ही कुछ पड़ गया हो,...

वे शुक्रगुज़ार होती हैं दुनिया वालो का
जिसने उन्हें रंग रंग के रंग दिखाये,
और खुद ही खुद के रंग में रंगना सीखा दिया...
और अनचाहे ही दे दिया एक रंगीन नीला आसमान,
जो सतरंगी रंगों से भरा पड़ा है,...

साथ ही मेरी कविताओं की स्त्रियां
मुस्कुराते हुए मन ही मन शुक्रिया भी अदा कर देती हैं,
उस दिव्य शक्ति का
जो उसे अदृश्य शक्तियाँ प्रदान करता है
ताउम्र चलते
जीवन संघर्ष में !!

अबोला प्रेम

तुम एक खूबसूरत ख़्वाब,
जो रात होते ही अक्सर
मेरी नींदों में चले आते हो
ख्वाबों में ही कर लेती हूँ तुमसे ढ़ेरो बातें,..

वो कही अनकही जो शायद
तुमसे सामने से कभी न कह पाई,
हज़ारों बातों के बीच में एक बार तुमने मुझसे पूछ लिया
क्यों मैं तुम्हें अच्छा लगने लगा हूँ??
मैं मौन हो सोच में पड़ गई...

क्या जवाब दूँ,.. क्या कहूँ तुमसे,
तुममें तो बहुत सी खूबियाँ दिखती हैं मुझे
तुम्हारा बेबाकपन, पागलपन और खूब बातें करना,...
फिर हर बातों के बीच में कहना 'आ गले लग जा'
और मैं मुस्कुराकर कहती हूँ...'हट पागल'

पर सच कहूँ,
तो तुम्हारे शब्दों की छुअन मुझे भीतर तक छू जाती है,..
मैं महसूस करती हूँ तुम्हें अपने रोम रोम में
निखर जाता है मेरा चेहरा और भी,
जब साफ़ दर्पण की तरह तुम्हारे
शब्द मुझे झकझोरने लगते हैं,..

मेरी कोमल भावनाएं तुम्हारे लिए ही
करने लगती हैं सोलह श्रृंगार,
और मेरा मन मोगरे की खुशबू सा हवाओं
में फ़ैल जाता है,..
हर आती जाती सांस में तुम्हें भरती हूँ, छोड़ती हूँ,
सम्मोहित हो जाती हूँ तुम्हारी बातों से
जानते हो,
तुम्हारा प्रेम मुझे सर्दियों की गुनगुनी धूप सा लगता है,..

तो कभी गोधूली की बेला में
सूरज की लालिमा लिए हुए खूबसूरत साँझ सा लगता है,
तभी मैं चोंकती हूँ और अपनी अधखुली आँखों से
नींद में ही तुमसे मैं भी पूछ लेती हूँ,
कि जिस तरह मैं तुम्हें सोंचती हूँ क्या तुम भी
मुझे उसी तरह सोंचते हो??

सुनो,
गर तुम भी मुझसे करने लगो मेरे जैसा प्रेम
तो बेहिचक कह देना मुझसे,
अभिव्यक्त कर देना अपना अबोला प्रेम मेरे सामने,
मैं समाहित हो जाऊँगी तुममें किसी स्वरलहरी की तरह,
गूंज उठूंगी तुम्हारे कानों में बनकर मधुर गीत,
बस महसूस करना तुम मुझको और बना लेना अपनी प्रेमिका!!

मैं शायद तुम्हारे प्रेम में पड़ चुकी हूँ,....

दिल है कि मानता नहीं

तुमसे कभी प्रेम किया था..
बेहद प्रेम
इतना...
जितना शायद तुमने कभी सोचा न होगा
हर बार उन दिनों जब भी लिखती
तुम्हें ही लिखती
हर आखर में बस तुम्हारा ही ज़िक्र करती.....

जानते हो,,
मन के गाँव की सपनीली दुनिया में
संवेदनाओं से भरी बस तुम्हें जीती रही
नहीं जानती थी तुम मेरे कौन थे
मगर बेहद अपने से लगते थे मुझे,..

लगता था मेरे पसंदीदा मोगरे के हज़ारो फूल
तुम्हारे रूप में मेरे मन पर बिखर गये हैं
जिनकी भीनी भीनी पाकीज़ा महक
मेरे मन को और महका जाती थी,..
मन को एक रूहानी सुकून से भर देती थी ये महक,
यूँ लगता था जैसे हवन वेदी से उठती
कोई पवित्र गंध मुझमें गहरे समा गई है,...

जानते हो, उन दिनों मैंने ओक में
भर लिया था तुम्हारा प्रेम,
ताकि बूंद बूंद तुम्हें पी जन्मों की प्यास बुझा लूँ,
और ज़ोर से सटा दी थी अपनी उंगलियाँ उँगलियों से,
ताकि तुम मुझमें से थोड़ा भी न रिसो,..
कस कर पकड़ बांध लेना चाहती थी तुम्हें
जो मेरी सबसे बड़ी भूल थी शायद,
भूल गई थी कि ओक में भरा प्रेम तो पानी सा होता है,
कितना भी ज़ोर से उंगलियां भींच लूँ
बूंद बूंद कब रिस जाता है पता भी नहीं चलता,..

फिर वक़्त की थाप पर
तुम्हारी चुप्पी की बर्फीली शिलाओं पर
मौनी नृत्य करता हमारा प्रेम थककर
बूंद बन बन आखिरकार रिस ही गया,
मेरी उंगलियों की महीन दरारों से
और मेरे पास बची रही नमी भरी हथेलियाँ,..

जानते हो,,
अब मैं अपनी नमी भरी हथेली से
अपने चेहरे को ढक तुम्हारी वही पुरानी महक,
महसूस करती हूँ....फिर देर तक मुस्कुराती हूँ,
क्योंकि आज भी मैं तुमसे बेहद प्रेम करती हूँ!!

सराय

आज राह चलते एक वृद्ध से मुलाकात हो गई
बातों बातों में ही बहुत सी बात हो गई
उस कुछ वक्त की छोटी सी मुलाकात में
मैंने उन वृद्ध से पूछा
बाबा आप कहाँ रहते हो?
मेरे इस प्रश्न पर वो मुस्कुरा दिये
और हँस कर कहा.... सराय में!

सराय! मन ही मन सोचने लगी सराय क्या होता है
कभी किसी शब्दकोश में गर पढ़ा भी होगा
तो याद नहीं आ रहा इसका अर्थ,..
मुझे कुछ महसूस सा हुआ
कि उनकी अनुभवी आँखें मुझे पढ़ रही हैं
अपनी पनियाई आँखों से मेरी आँखों को पढ़
अपने मन में जाने कितनी यादों को समेटे
आह से भरते मुझसे कहा
सराय वो होता है जहाँ घर से भटके राहगीर पनाह लेते हैं,...

मैंने आश्चर्य से कहा -
बाबा आपका तो घर है,
फिर आप क्यूँ ऐसा बोल रहे हैं
सुनते ही उन झुर्री भरी आँखों से
आँसू की कुछ बूंदे
उन पिचके गालों पर लुढ़क आई,..

फिर अपनी लपलपाती जीभ से उन बूंदों को चख
थोड़ा रुआँसा हो बोले
घर वो होता है
जहाँ गुलज़ार होते हैं चमन अपनो से,
घर वो होता है...

जहाँ स्नेह का दरिया सा बहता है हरपल,
घर वो होता है...
जहाँ बजती हैं चूड़ियाँ जलतरंग के माफ़िक,
घर वो होता है...
जहाँ बच्चों की खिलखिलाती हँसी
हृदय को जीवित कर देती है,
घर वो होता है...

जहाँ होती है हुड़दंगियां जीवन के हर छोटे बड़े पल में,
जिनसे सफल थे जीवन के मायने,
जहाँ हर पल दे जाते थे कभी न भूलने वाली
प्यारी सी ढ़ेरो सौगातें,
जो इस दिल की संदूकची में सहेजी जस की तस है,..
और क्या क्या बतलाऊँ तुम्हें
कि क्या होती है जीवन की मिठास,
अब तो सब छूट गया है
बच्चे सैटल्ड हो गये हैं,
पत्नी भी छोड़ गई,..
तो घर कहाँ है मेरे बच्चे
ये तो सराय है,..

और मैं दिल को नापने वाली ईसीजी मशीन की तरह
उनके चेहरे के उतरते चढ़ते भावों को पढ़ती
अवाक सी सोच रही थी
बाबा ठीक ही तो बोल रहे हैं
घर तो अपनो से होता है
कितना प्यारा सच कहा है उन्होंने
ये तो सचमुच सराय है
जहाँ वो अपनी जिंदगी के बचे खुचे दिन,...
अकेलेपन का दंश झेलते काट रहे हैं

हाँ! सच वो सराय में ही तो रहते हैं!!

सादा रंग

ये सादा रंग भी कैसा होता है ना
बिल्कुल अजीब सा शांत, ठहरा हुआ
जिसका न कोई रंग, न कोई खुशबू
न कोई चमक, ना ही महक
बस सब सादा ही सादा....

ठीक उस नई नवेली दुल्हन की तरह
जिसे वक़्त ने अचानक ही सफ़ेद साड़ी पहना दी।
कभी रंगों से उसने भी खूब प्रेम किया था
मगर अब तो तैरता है , आँखों में फैला सा काजल,
जो उसके पूरे अंतस को काला कर देता है।

चुभ जाती है चुड़िया और बींध देता है कंठहार,
भारी कर देता है उसका मन, ये छमछम बजता पाजेब,
ठहरती नहीं अब तो मेहंदी भी उसके हाथों पर,
और ये बेतरतीब सी लटें, इतनी ज़िद्‌दी हो गई हैं,
कि सुलझने का नाम ही नहीं लेती।

आइने में भी एक धुंध सी जम गई है,
जिसे हटा वो देखना चाहती है
अपना अक्स, एक रंगहीन सौंदर्य,
जिसे अपनाया है ,उसने बड़े बेमन से
ये उसका चुनाव नहीं था,..

उसकी विवशता भी नहीं थी
शायद नियती थी उसकी,
कि हर रंगों से अलग सादा रंग
उसे सबसे अलग-थलग कर देता है,
और कुछ नहीं बचता ज़िंदगी में उसकी
सादगी के सिवा !!!

व्यक्तित्व दर्पण

नाम	- काजल भालोटिया
जन्म	- 08.04.1978, मुजुफ्फरपुर (बिहार)
माता	- कुसुम जालान
पिता	- श्री ओम प्रकाश जालान
शिक्षा	- स्नातक (हिन्दी)
कार्यक्षेत्र	- गृहणी, सामाजिक क्षेत्र - मारवाड़ी महिला समिति की अध्यक्षा (वर्तमान)
प्रकाशन	- के.जी. साहित्य द्वारा साझा संग्रह में प्रकाशित कुछ कविताएं
सम्मान	- के.जी. साहित्य द्वारा साहित्य सारथी सम्मान।
अन्य	- सामाजिक क्षेत्र में कार्य कर समाज के उत्थान हेतु प्रयासरत् ।
उद्देश्य	- मन के भावों, विचारों को कागज़ पे उतार देना और एक आत्मविश्वास सा महसूस करना।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनानें में अमूल्य योगदान देगी ।

Women आवाज़ आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

978-93-88102-20-9

मूल्य 40/-

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com